भगत रविदास – सबद १५
जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
रागु सोरठि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५८

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥१॥
माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥
अब कहा करहुगे ऐसी ॥१॥ रहाउ ॥
मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी ॥
खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥२॥
आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥
मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥३॥
कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ ॥
जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ ॥४॥२॥

सार: आध्यात्मिक गहराई की अवधारणा अत्यंत निजी, घनिष्ठ होती है जिसे शब्दों में बाँध पाना कठिन होता है। इसमें कई अवस्थाएँ शामिल हैं, जैसे कि चिंतन, खोज और बदलाव, यह सभी व्यक्ति को आत्म-विकास की दिशा में ले जाती हैं। हर व्यक्ति की आध्यात्मिक विकास की यात्रा अनोखी, अलग होती है और इसमें अक्सर मान्यताओं और दर्शन को समझना, साथ ही जीवन में अर्थ और उद्देश्य खोजना शामिल होता है। इस संदर्भ में, घनिष्ठ का अर्थ भीतरी जागरूकता के साथ एक गहरा जुड़ाव है जिससे एकत्व का भाव और स्वीकृति विकसित होती है। यह यात्रा केवल शारीरिक, भावनात्मक या निजी संबंधों तक सीमित नहीं रहती बल्कि उन गुणों पर केंद्रित होती है जो सार्वभौमिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं। इसी कारण आध्यात्मिकता एक विशिष्ट और व्यक्तिगत मार्ग बन जाती है।

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥

जैसे हम मोह-माया से बंधे और फंसे रहते हैं, वैसे ही प्रेम के बंधन से हम आप से, उस सर्वव्यापी चेतना से जुड़ेंगे। यहाँ दो प्रकार के बंधनों का संकेत है, एक जो पकड़ने से जकड़ता है और दूसरा जो निकटता से जोड़ता है।

अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥१॥

बहुत लोग अनेक उपायों से मुक्ति पाने की कोशिश करते हैं, मैंने सर्वव्यापी चेतना के चिंतन से ही मुक्ति पाई है। (१)

माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥

हम सर्वव्यापी चेतना को वैसे ही जानते हैं जैसी हमारी समझ और दृष्टि है। यह दर्शाता है कि हमारी अनुभूति हमारी संस्कारों की समझ से ढली हुई होती है।

अब कहा करहुगे ऐसी ॥१॥ रहाउ ॥

तो फिर आप जैसे हो, वैसे कैसे कहे जा सकते हो? यह प्रश्न हमें बिना किसी तोड़-मरोड़ या सजावट के, सच्चाई के सार को खोजने और साँझा करने के लिए आमंत्रित करता है। (१)(विराम)

मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी ॥

मछली पकड़ी जाती है, टुकड़ों में काटी जाती है और अनेक प्रकार से पकाई जाती है। यह जीवन के अनुभवों और कष्टों से गुज़रने की प्रक्रिया का रूपक है।

खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥२॥

टुकड़े-टुकड़े करके खाए जाने पर भी, वह पानी से अपने आंतरिक संबंध को नहीं भूलती। यह जागरूकता की सच्ची प्रकृति को दर्शाता है जो आघात, परिवर्तन या विभाजन के प्रभावों के बावजूद अपने स्रोत से जुड़ी रहती है। (२)

आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥
श्रेष्ठ वास्तविकता पूर्वजों से विरासत में नहीं मिलती, इसे वह लोग अपनाते हैं जो एकता और संतोष को महत्व देते हैं। यह विचार धार्मिक वंशानुक्रम या विशेषाधिकार को अस्वीकार कर, उजागर करता है कि स्रोत के साथ संबंध एकात्मता के माध्यम से ही अनुभव किया जा सकता है।

मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥३॥
मोह और भ्रम पूरी दुनिया को उलझाते हैं लेकिन ज्ञान से जुड़े समर्पित साधक अप्रभावित रहते हैं। यह अंतर बताता है कि कैसे अज्ञानता सामंजस्यपूर्ण वातावरण में भी बनी रह सकती है जबकि स्पष्टता अराजकता के बीच भी आंतरिक शांति को बढ़ावा देती है। (३)

कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ ॥
रविदास कहते हैं कि एकत्व की यह भक्ति अब अत्यंत गहन हो गई है, इसे किससे और कैसे कहा जाए? यह उस आध्यात्मिक गहराई की अवस्था की ओर संकेत करता है जो व्यक्तिगत, घनिष्ठ और अवर्णनीय है।

जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ ॥४॥२॥
जिस कारण से मैंने तुम्हारी आराधना की थी, वही दुःख अभी भी बना हुआ है। यह बताता है कि अलगाव के दर्द को कम करने की खोज शुरू करने के बाद भी, जब तक एकता को स्वयं या समाज द्वारा अपनाया नहीं जाता तब तक अलगाव का कष्ट बना रहता है। (४)(२)

तत्त्व: भक्त रविदास दूसरों के साथ रहते हुए भी अकेलापन महसूस करने की पीड़ा का ज़िक्र करते हैं। यह सामाजिक अलगाव तब होता है जब कोई पहचान हमारे सांझे एकत्व पर हावी हो जाती है तब व्यक्ति और समाज, दोनों में विभाजन गहरा हो जाता है। दुख तब तक बना रहता है जब तक सामूहिक भावना का अभाव यह समझने में बाधा डालता है कि हमारा कल्याण एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। इसका उपचार तब शुरू होता है जब हम मानवीयता के साथ, असहमति के लिए जगह बनाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com